राजस्थान पत्रिका (Rajasthan Patrika)

(उदयपुर संस्करण)

दिनांक (Dated):	पृष्ठ सं. (Page No.) 02	क्रम सं. (Serial No.) 18

माउंट एवरेस्ट फतह, रचा इतिहास

उदयपुर. उदयपुर के महाराणा प्रताप डबोक एयरपोर्ट पर पदस्थापित सीआईएसएफ की महिला उप निरीक्षक गीता समोटा ने 8,849 मीटर ऊंचे माउंट एवरेस्ट पर सफल चढ़ाई कर इतिहास रच दिया। यह कामयाबी हासिल करने वाली सीआईएसएफ की यह पहली महिला अधिकारी है। गीता की यह उपलब्धि सीआईएसएफ की शक्ति और राष्ट्र की असीम साहस का प्रतीक बन गई।

महाराणा प्रताप डबोक एयरपोर्ट पर पदस्थापित है उप निरीक्षक गीता समोता

सीआईएसएफ की महिला अधिकारी ने रचा इतिहास, माउंट एवरेस्ट पर की सफल चढ़ाई

उदयपुर. केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की महिला उप निरीक्षक गीता समोता ने 8,849 मीटर ऊंचे माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई कर इतिहास रच दिया। यह कामयाबी हासिल करने वाली सीआईएसएफ की यह पहली महिला अधिकारी हैं। गीता की यह उपलिब्ध सीआईएसएफ की शक्ति और भारतीय राष्ट्र की असीम साहस का प्रतीक बन गया। वे वर्तमान में उदयपुर एयरपोर्ट पर पदस्थापित हैं।

पांच शिखरों का सफर तय कर चुकी : वर्ष 2019 में उन्होंने उत्तराखंड की माउंट सतोपंथ (7,075 मीटर) और नेपाल की माउंट लोबुचे (6,119 मीटर) पर सफलतापूर्वक चढ़ाई पूरी की। वर्ष 2021 में वह माउंट एवरेस्ट अभियान की भी प्रमुख सदस्य थीं, लेकिन अभियान रद्द कर दिया गया। तत्पश्चात उन्होंने एक और चुनौतीपूर्ण लक्ष्य "सात शिखर" अभियान स्वीकार किया। कोविड महामारी के बावजूद वे ऑस्ट्रेलिया में माउंट कोसियस्ज़को (2,228 मीटर), रूस में माउंट एल्ब्रस (5,642 मीटर), तंजानिया में माउंट किलिमंजारो (5,895 मीटर) और अर्जेंटीना में माउंट एकॉनकागुआ (6,961 मीटर) पर पहुंच गई। लद्दाख के रूपशु की चोटियों पर भी सफलतापूर्वक चढ़ाई की।

कई पुरस्कारों से नवाजा

गीता समोता को कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है। दिल्ली महिला आयोग और नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। वह बेटियों से कहती हैं, "बड़े सपने देखो, मेहनत करो और कभी हार मत मानो।"

गांव की गलियों से पहुंची माउंट एवरेस्ट की चोटियों पर

सीकर जिले के छोटे से चक गांव से शुरू हुई यह प्रेरणादायक यात्रा उस अदम्य साहस का परिणाम है, जिसने हर बाधा को पार कर एक असाधारण उपलब्धि को संभव बनाया। चार बहनों के साधारण परिवार में जन्मी गीता का पालन-पोषण ग्रामीण परिवेश में हुआ। स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई स्थानीय स्तर पर की। वे कॉलेज में उत्कृष्ट हॉकी खिलाड़ी रहीं। एक चोट ने उनके खेल कॅरियर को जरूर रोक दिया, लेकिन उसका हौसला डिगा नहीं। उन्होंने जीवन को नई दिशा की ओर मोड़ा। वे 2011 में सीआईएसएफ में शामिल हुईं। सेवा के दौरान उन्होंने पर्वतारोहण की चुनौती स्वीकार की। वर्ष 2015 में औली स्थित भारत-तिब्बत सीमा पुलिस प्रशिक्षण संस्थान में छह सप्ताह के बुनियादी पर्वतारोहण पाठ्यक्रम में उनका चयन हुआ। वे अपने बैच की एकमात्र महिला प्रतिभागी थीं। ट्रेनिंग के दौरान उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने उनके भीतर न केवल आत्मविश्वास और दृढ़ता को और मजबूत किया, बल्कि पर्वतारोहण के प्रति जुनून और कौशल को भी नई